प्रस्तावना

कुपोषण की समस्या से दुनिया के अधिकांश देश जुड़ने रहे हैं। यूनिसेफ की मान्यता तो दुनिया में कुपोषण के चिकित्सक कुल बच्चों की तात्पर्यक्षेत्रन्त 44.6 करोड़ से भी अधिक है। इनमें से 5.7 करोड़ से ज्यादा तो आसफ़ भारत में ही हैं। यह संख्या दुनिया के कुल कुपोषण के एक-तिहाई से अधिक है। देश में करीब 19 करोड़ लोग कुपोषित हैं। यह आंकड़ा कुल आबादी का 14.5 प्रतिशत के करीब है। कुपोषण के मामले में सबसे ज्यादा खराब स्थिति महिलाओं की है। भारत में 48 सालतक के बच्चों की संख्या 43 करोड़ हैं। इसमें यदि महिलाओं के संख्यात्मक व्यवस्थापित दी जाये तो यह आंकड़ा कुल आबादी का 70% प्रतिशत के आस-पास पहुंच जाता है। दुनिया में हर 5वीं बच्चा भारतीय है। जहां कुपोषण का समय है, दुनिया में यह तेजी से बढ़ रहा है।

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि पोषण की अपराजिता के कारण साल 2050 तक भारत की तकरीबन 5.30 करोड़ से अधिक आदर्श प्रोटोटिप की कमी से जुड़ीगी। उस हालत में जबकि आज भी हमारा देश कुपोषण, भूखमर्यादा, गरीबी, लोकसभा, लिङ्गों, पर्यावरण विवाद और राजनीतिक वैज्ञानिकों के एक विज्ञान से बाहर है। यह आंकड़ा भारतीय कुपोषण के लक्ष्य की अपराजिता की कमी का साक्ष्य है। इस मामले में लाख दावों के बावजूद देश का अधिकांश आबादी को पीने के साफ़ पानी में नाकाम है। सच कहा जाय तो यहां हर साल होने वाली 24 लाख बच्चों का कारण कुपोषण ही है।

बाल कुपोषण दर:-

हमारे यहां 3 साल के कम आयु के 47 पीसदी बच्चे कुपोषित है। 45 पीसदी अपनी आयु के हिसाब से कद में काफी छोटे हैं। इन मामलों में 205-46 के दरांत करिये गये नेशनल फार्मेल आमल सर्व-4 की मान्यता कुपोषण के कारण देश भर के 38.5 पीसदी 5 साल तक के बच्चों की लंबाई उब तक के काफी कम था। इनमें से 21 पीसदी में यह समस्याकारी गंभीर है। छोटे कद में बच्चों की तात्पर्यक्षेत्र शहरों में 3। और गांवों में 44 पीसदी है। कद छोटा होने वाले अत्यधिक प्रभावित बच्चों की संख्या 24 पीसदी है। ऐसे बच्चों का शहरों और गांवों में प्रभावित समान है। दुरालाल समस्या इतनी भयानक हो चुकी है कि हमारी भावी नरकिर अभावित हुए विना नही बची। बाल कुपोषण की शुरुआत गरीबतोहोने के
दौरान तथा बच्चे के जीवन के शुरुआती फसल के कहानियों में ही होती है।

भारत में 47 लाख बच्चे एक साल की उम्र पूरी करने से पहले और 4.08 लाख बच्चे एक महीने की उम्र भी पूरा नहीं कर पाते और मौत केमुंड में चले जाते हैं। जबकि 5 साल से कम उम्र के 24 लाख बच्चे मौतके शिकार होते हैं। इस रूप में, जबकि समस्ती दुनिया में 5 साल के उम्र के बच्चे पर आराम न धिल पाते, बुनियादी रुप से हार्दिक संभावना और स्वास्थ्य रक्षा में कमी के कारण मौत के मुंह भंग करते हैं।

हालांत की भविष्यवाणी का सबूत यह है कि जीवन शुरुआती चहाँ महीनों में कम वजन के बच्चों का प्रतिशत 46 प्रतिशत सेवकयास 30 प्रतिशत निवोटक जाता है। परीस्थितियाँ न हो पाने से निश्चित, नागरिक, निमितिया और नवजात बच्चों में संक्रमण जन्म के बाद बेहोश सारों में होने वाली मौतों का मुख्य कारण है।

कुपोषण की समस्या तथा निवारण

कुपोषण, पोषण की यह स्थिति है जिसमें “भोजन पदार्थ के गुण और परिस्थितियों में अपर्याप्तता होती है। कभी-कभी आवश्यकता से अधिक प्रयोग द्वारा हानिकारक प्रभाव तरीके में उत्पन्न होने लगता है तथावत रूप से भी उसका कारण प्रदर्शित हो जाता है।” जब यथिक कारसिक, मानसिक विकासआरोग्य हो तथा वह अस्वस्थ महसूस करेगा/या महसूस न भी करे तो भी भीतर से अस्वस्थ हो (जिस अवस्था स्कोल चिकित्सकी है पहचान सकता है) तब रूप है कि उसे अपनीआवश्यकता के अनुसार पोषक तत्त्व नहीं मिल रहे हैं। ऐसे स्थितिकुपोषण की स्थिति कहलाती है। कुपोषण यह स्थिति है जिसमें भोजनतत्त्व के गुण और परिस्थितियों में अपर्याप्त होती है तथा कभी-कभीआवश्यकता से अधिक प्रयोग हो रहा है; जिससे हानिकारक प्रभाव तरीके पर उत्पन्न होते हैं।

हमारे देश के प्राथमिक विन में कुपोषण की समस्या व्यापकपूर्णे पर पाया गया है, खासकर यथिक क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों में, जहाँ जिन में लाख बच्चे से बच्चे का पुष्टि लगाता है। कुपोषण समाज के धनी और निर्जित, दोनों वर्गों में यह देखने का मिलता है, परन्तु विशेष रूप से अभावगतक्षेत्रों में यह भी भावना रूप से मौजूद रहता है। ऐसे क्षेत्रों में पोषक तत्त्वों क्रियान्वयन रूप से अनुसार भावना रूप से मौजूद होता है। ऐसे क्षेत्रों में एक अवस्था कहीं प्राथमिक निम्न और मध्यम वर्गों में कुपोषण की समस्या में अत्यन्त विकसित रूप से लेकर खड़ी है।

प्राथमिक विद्यालयों में कुपोषण की समस्या को दूर करने का प्रयास जाता जाता है। वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित मध्यम भोजन योजना बच्चों को कुपोषण दूर करने का एक कारगर कदम साबित होरहा है। गप्का के भोजन के माध्यम से बच्चों को विद्यालयों में पूर्ण आहार उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके कारण बच्चों को शिक्षा के माध्यम से पौष्टिक आहार के बारे में शिक्षा दी जा रही है। सरकार आयोजन एवं विभिन्न कार्यों में वालों के लिए बाध्य कर-4 है कि जो बच्चे विद्यालयों में स्वच्छता अभ्यास चालू रहां जा रहा है तथा वालों को स्वच्छ रहने के विभिन्न आयामों का बताया जाय जाय की व्यवस्था की पेषज्जल स्वच्छ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- इंडियन कॉन्सोल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च (1996), नेशनल न्युट्रिशनमोनिटरिंग व्यूरे रिपोर्ट, 4996 ग्रामीण संवेदना, नेशनल इंटरनेट फॉरन्युट्रिशन, हेल्दरवाद |
गोपाल एस., शिवा एम., संपादित (999) नेशनल प्रोफाईल ऑन वूमैन, हेल्थ एण्ड डेवलपमेंट : इंडिया, वालेन्ट्री हैल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।

नीता अग्रवाल, बाल विकास

अपारिक, डा० आशा, बाल विकास एवं पारिवारिक संबंध, कॉलेज बुकडिपो, जयपुर, 2006

बखशी, उपचारार्थ आहार प्रबन्धन तथा सामुदायिक पोषण, अय्याललपन्नकेशाल

वृंदा सिंह, आहार विज्ञान एवं पोषण, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2010

भारत सरकार, वाणिज्यिक रिपोर्ट 4994-95 स्वास्थ्य परिवार कल्याणमंत्रालय, नई दिल्ली

विश्व स्वास्थ्य संगठन का प्रतिवेदन, 2009, पृ-37

डॉ. झेता श्री

गेस्ट फैकल्टी, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग ल० न्यू मिस्ट्री विंडविंड, दरभंगा.